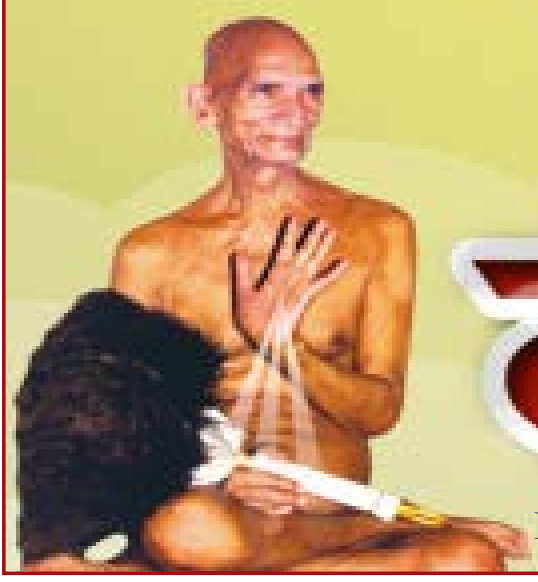

Issue: 146
01 Sept. 2020

www.jainachar.com Daily

जैनाचार

Editor: Mamta Anil Gandhi - Mumbai 9619160611 / 9323804751

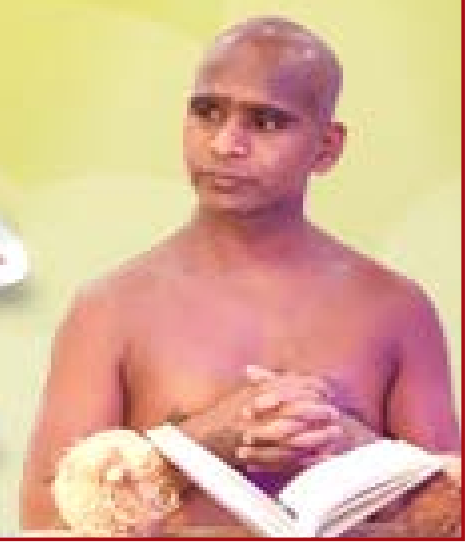

enkjfxjh es bl ckj ugha fudkyh tk,xh rhFkZadj oklqiT; Hkxoku dh jFk;k=k] ugha dh xbZ dksbZ [kkl rS;kjh---

प्राचीन परम्परा रहेगी बरकरार सिर्फ जैन मंदिर प्रबंधन मंदार शिखर पर चढ़ाएगा निर्वाण लाडू।
कोरोना इफैक्ट...जैन मंदिर प्रबंधन ने रथयात्रा नही निकालने का लिया निर्णय।

कोरोना संक्रमण के कारण लॉकडाउन में धार्मिक आयोजन पर देशभर में पाबंदी लागू है। जिस कारण इस बार विश्व प्रसिद्ध जैन धर्म के 12 वें तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य स्वामी के तप, ज्ञान व निर्वाण स्थली श्री मंदारगिरी दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र बौंसी में भगवान वासुपूज्य के मोक्ष कल्याणक पर प्रत्येक वर्ष आयोजित होने वाले रथयात्रा महोत्सव इस बार नही मनाया जाएगा। जानकारी हो कि भगवान वासुपूज्य का निर्वाण महोत्सव आज है जिसको लेकर स्थानीय जैन मंदिर प्रबंधन द्वारा रथयात्रा नहीं निकालने का निर्णय लिया गया है। जिस कारण कार्यक्रम को लेकर कोई खास इंतजाम देखने को नही मिला है।

2011 es 'kq: gqbZ Fkh jFk;k=k dh ijaijk

मंदारगिरी दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र के तत्कालीन प्रबंधक पवन कुमार जैन के नेतृत्व में वर्ष 2011 में बहुत ही धूमधाम और भव्य तरीके से रथयात्रा महोत्सव की परंपरा शुरू हुई थी। जो आज देश स्तर पर मनाया जाने लगा। पवन कुमार जैन की पहल व अथक प्रयास से निर्वाण महोत्सव को समय के साथ नया भव्य रूप मिलने लगा। जिसे आज अंग क्षेत्र मंदार में जैनियों का सबसे प्रमुख उत्सव वासुपूज्य निर्वाण महोत्सव के नाम से जाना जाता है। इसी के साथ रथयात्रा महोत्सव का प्रचार प्रसार बढ़ता गया। इस अवसर पर आयोजन में सम्मिलित होने खास तौर पर जैन तीर्थयात्रियों का आगमन होने लगा। वर्तमान में सुसज्जित भव्य रथ पर भगवान वासुपूज्य स्वामी की प्रतिमा को विराजमान कर पूरा बौंसी बाजार और मंदार क्षेत्र का भ्रमण करा कर पर्वत तलहटी तक हर्षोल्लासपूर्वक रथयात्रा निकाली जाती हैं। इसके पश्चात जैन श्रद्धालु मंदारगिरी पर्वत शिखर पर पहुंचकर धूमधाम के साथ भगवान वासुपूज्य निर्वाण महोत्सव मनाते है और विभिन्न प्रकार के धार्मिक अनुष्ठान करते है।

इसके पहले यहां भगवान वासुपूज्य निर्वाण महोत्सव पर स्थानीय स्तर पर शोभायात्रा निकालकर प्राचीन परम्परानुसार जैन धर्मावलंबी मंदारगिरी पर्वत शिखर स्थित मोक्ष कल्याणक भूमि पर निर्वाण लाडू चढ़ाते थे।

fuokZ.k egksRlo ij n'kZukFkhZ ls tqVrs Fks tSu ekekoyach

ज्ञात हो कि भाद्रपद अनंत चतुर्दशी को 12 वें तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य निर्वाण महोत्सव के अवसर पर देशभर के विभिन्न प्रांतों और क्षेत्रों से काफी संख्या में जैन धर्मावलंबियों का जुटान होता था। लेकिन इस बार कोरोना महामारी के कारण धार्मिक स्थल बंद होने से तीर्थयात्रियों का आवागमन पूर्णतः वर्जित है। वहीं स्थानीय जैन मंदिर प्रबंधन भी इस आयोजन को सादगीपूर्ण तरीके से मनाकर धार्मिक परम्परा की औपचारिकता पूर्ण करेगी। मंदार पर्वत शिखर पर वासुपूज्य भगवान के प्राचीन चरण पादुका पर इस बार जैन तीर्थयात्रियों के बिना सादगीपूर्ण तरीके से निर्वाण लाडू चढ़ाया जाएगा।

ojkX; voLFkk esa Hkze.k ds Øe esa enkjfxjh igqaps Fks Hkxoku oklqiT;A

प्राचीनकाल में जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव (आदिनाथ) जी के समय विभाजित 52 जनपद में से चंपा नगरी क्षेत्र अंग जनपद के नाम से प्रसिद्ध रहा है। इसलिए मंदारगिरी को अंग क्षेत्र का प्रसिद्ध तीर्थ स्थल कहा जाता है। भगवान वासुपूज्य जन्म से वैरागी थे, जो वैराग्य अवस्था में भ्रमण के क्रम में चम्पापुरी से मंदारगिरी पहुंचे थे। जहां उन्होंने पर्वत शिखर पर कठिन तप करके कैवल्य ज्ञान को प्राप्त किया और इसके पश्चात यहीं से मोक्ष प्राप्त किया। जिसे जैन धर्म के 12 वें तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य स्वामी का क्रमशः तप कल्याणक, ज्ञान कल्याणक और निर्वाण कल्याणक स्थली कहा जाता है। भागवान वासुपूज्य भाद्रपद शुक्ल पक्ष चतुर्दशी के दिन मनोहर उद्यान में 94वें मुनियों के साथ मंदारगिरी से निर्वाण प्राप्त किया था। इनका गर्भ और जन्म स्थली चम्पापुर (भागलपुर) है। मंदारगिरी के सुरम्य वादियों का लुफ्त उठाने तथा जैन तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य स्वामी की निर्वाण भूमि पर हर जैन धर्मावलंबी अपने जीवन में शीश टेकने एक बार जरूर यहां आते है और उनकी मनोकामना पूर्ण भी होती है। साथ ही साथ यह पवित्र पावन स्थली जैन मतावलंबियों के लिये सिद्ध क्षेत्र होने के कारण विशेष तौर पर आस्था का केंद्र है।

रिपोर्ट–प्रवीण जैन, पटना

आत्म प्रक्षालक : दशलक्षण पर्व

प.पू. गणिनी आर्यिका शुभमति माताजी

उत्तम ब्रह्मचर्य : ब्रह्म भाव में रमण करने को उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म कहते हैं, ब्रह्मचर्य धर्म के इच्छुक मानव की दृष्टि में पर स्त्री माता -बहिन-बेटी के तुल्य हुआ करती है। संसार में इस धर्म की अहं भूमिका है.अतः अपनाए और अक्षय सुख को प्राप्त करें। उत्तम ब्रह्मचर्य सभी धर्मो में सर्व श्रेष्ठ सर्वोत्तम है। मन से उत्पन्न, मलिनता का कारण, मलमूत्रादि को झरानेवाला, दुर्गंध से सहित और ग्लानि को उत्पन्न करने वाले इस शरीर को देखता हुआ जो काम सेवन से विरत होता है वह ब्रह्मचर्य का धारी माना गया है। मन, वचन, काय और कृत-कारित और अनुमोदनारूप नवकोटि से विशुद्धि यह ब्रह्मचर्य परम सुख शांति का शुद्ध निश्चय नय से आत्म ब्रह्म स्वरूप अपने आत्मा में चर्या करना, रमण करना अभेद नय से ब्रह्मचर्य है। तथा व्यवहार से ब्रह्मचर्य व्रत के दो भेद है- १) ब्रह्म-चर्यानयव्रत, २) ब्रह्मचर्य महाव्रत, ब्रह्मचर्याणुव्रती का स्वदार संतोष अर्थात् एक पत्नि व्रत होता है। जब कि ब्रह्मचर्य व्रत मात्र तन से नहीं मन से होना चाहिए। यदि मन आापका पवित्र है, निर्मल है तो वाचनिक व कायिक अब्रम्ह से वचनासहज है। इस व्रत से दुर्गति रूप संसार का नाश करता है तथा अपने ब्रह्म स्वरूप आत्मा को शाश्वत सुख देता है।

घर घर मंदिर...घर घर भगवान...